L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)

DR. PRAMOD KUMAR SAHU
Assistant professor.
Guest Teacher.
V.S.J. College. RAJNAGAR
MADHUBANI (BIHAR)
pramod kumar sahu 2018 @ gmail.com

B.A PART - II
PAPER - IV
PSYCHOLOGY (HONOURS)
TOPIC - Gestalt Theory

गेस्टाल्ट उपागम या सिद्धान्त का प्रतिपादित मनोविज्ञान से एक सम्पूर्ण सम्प्रदाय गेस्टाल्ट मनोविज्ञान (Gestalt psychology) जिसमें वर्दीमर (Wertheimer) कोहलर (Kohler) कोफ्का (Koffka) का नाम मशहूर है। सच कहा जाए, गेस्टाल्ट उपागम की व्याख्या निम्नलिखित चार भागों में बाँटकर कर सकते हैं

(i) आकृति - पृष्ठभूमि प्रत्यक्षण (Figure-ground perception)
(ii) प्रत्यक्षणात्मक संगठन का नियम।
(iii) समाकृतिकता का सिद्धान्त।
(iv) क्षेत्र बल (Field Forces)

आकृति - पृष्ठभूमि प्रत्यक्षण :- गेस्टाल्ट सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति किसी वस्तु का प्रत्यक्षण अलग - अलग नहीं कर एक सम्पूर्ण रूप से (as a whole) करता है। यह सम्पूर्ण प्रत्यक्षण (Whole perception) का अपना एक विशेष गुण होता है। जो वस्तु के भिन्न-भिन्न हिस्सों (Parts) के प्रत्यक्षण के विशेष गुण से भिन्न होती है। व्यक्ति जब किसी दूसरे व्यक्ति के चेहरे को देखता है, तो उसके आँख, नाक, कान, होंठ, गाल, आदि (जो चेहरे के हिस्से हैं) को अलग-अलग नहीं देखता है, इतना ही नहीं, चेहरा को भी सम्पूर्ण प्रत्यक्षण (Whole perception) का अपना एक विशेष गुण होता है। जो चेहरे के किसी भी हिस्से के गुणों से भिन्न होती है।
जब व्यक्ति किसी वस्तु विशेष का प्रत्यक्षण करता है। तो उसे वस्तु विशेष का कुछ भाग अत्यन्त स्पष्ट दिखलाई देती है।

तभी कुछ धुंधलापन रूप से कम स्पष्ट दिखाई देता है। जो भाग अत्यन्त स्पष्ट दिखाई देता है, उसे आकृति (Figure) तथा जो भाग कम स्पष्ट दिखलाई देता है, उसे पृष्ठभूमि (background) कहा जाता है। इस तरह के प्रत्यक्षण को आकृति-पृष्ठभूमि प्रत्यक्षण कहा जाता है। चित्र में आकृति-पृष्ठभूमि प्रत्यक्षण का स्पष्ट उदाहरण मिलता है। जो आकृति (Figure) तथा जो पृष्ठभूमि दिखलाई देती है। यदि उजला भाग आकृति (Figure) के रूप में उभरता है तो व्यक्ति को फूलदान (Flower vase) दिखाई पड़ता है तथा काला वाला भाग पृष्ठभूमि (background) के रूप में दिखलाई देता है। परन्तु जब काला वाला भाग स्पष्ट रूप से यानी आकृति (Figure) के रूप में दिखलाई देता है, तो व्यक्ति को आमने-सामने हुए दो व्यक्तियों का चेहरा दिखलाई पड़ता है तथा उजला भाग पृष्ठभूमि के रूप में दिखलाई पड़ता है। इस तरह से हम कुछ समय के लिए देखते रहते हैं तो कुछ सेकेंड के लिए फूलदान, तथा कुछ सेकेंड के लिए आमने-सामने हुए दो व्यक्तियों का चेहरा दिखलाई देता है। हम गौर से कुछ देर तक देखते हैं तो उजले भाग को आकृति के रूप में उभरने पर फूलदान तथा काले भाग को आकृति के रूप में उभरने पर व्यक्ति एवं उनके चेहरे दिखाई देते हैं। ऐसे आकृतियों को पलटावी आकृति कहा जाता है। गेस्टाल्टवादियों ने आकृति (Figure) तथा पृष्ठभूमि (background) में एक दूसरे से स्पष्ट विभेद (distinction) कई ढंग से किया है।

(i) आकृति का एक निश्चित आकार (Form) होता है जबकि पृष्ठभूमि आकारहीन होता है या यदि आकार होता भी है तो उसके किसी प्रकार की आकृति नहीं बनती है।

(ii) पृष्ठभूमि हमेशा आकृति (Figure) के पीछे होता है और आकृति निश्चित आकार के लिए हुए उसी पृष्ठभूमि पर उभरी हुई दिखलाई पड़ती है।

(iii) ਆਕ੍ਰਿਤਿ ਕਾ ਨਿਸ਼ਚਿਤ ਆਕਾਰ ਹੋਨੇ ਕੇ ਕਾਰਣ ਵਹ ਅਧਿਕ ਪ੍ਰਭਾਵਪੂਰਣ ਤਥਾ ਆਕਰਸ਼ਕ ਹੋਤਾ ਹੈ ਪਰਨ੍ਤੁ ਪ੍ਰਿਸ਼ਠਭੂਮਿ ਅਸਪਸ਼ਟ ਏਵੰ ਅਨਿਸ਼ਚਿਤ ਆਕਾਰ ਕੀ ਹੋਤੀ ਹੈ ਅਤਃ ਵਹ ਪ੍ਰਭਾਵਹੀਨ ਹੋਤਾ ਹੈ ਤਥਾ ਉਸਕਾ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਮਹਤ੍ਵ ਨਹੀਂ ਹੋਤਾ ਹੈ

(iv) ਆਕ੍ਰਿਤਿ ਕਾ ਸਥਾਨ ਪਰਿਮਿਤ, ਕੇਵਲ ਨਿਸ਼ਚਿਤ ਤਥਾ ਸੀਮਿਤ ਹੋਤਾ ਹੈ, ਪਰਨ੍ਤੁ ਪ੍ਰਿਸ਼ਠਭੂਮਿ ਪੀਛੇ ਕੀ ਓਰ ਅਨਨ੍ਤ ਫੈਲਾ ਹੋਤਾ ਹੈ।

(v) ਗਤਾਤਮਕ ਰੂਪ ਸੇ ਭੀ ਆਕ੍ਰਿਤਿ ਤਥਾ ਪ੍ਰਿਸ਼ਠਭੂਮਿ ਮੇਂ ਅੰਤਰ ਹੋਤਾ ਹੈ। ਇਸਕਾ ਮਤਲਬ ਯਹ ਹੁਆ ਕਿ ਏਕ ਪਰਿਸਥਿਤਿ ਮੇਂ ਜੋ ਵਸਤੁ ਆਕ੍ਰਿਤਿ ਕੇ ਰੂਪ ਮੇਂ ਦਿਖਾਈ ਦੇਤੀ ਹੈ ਥੋੜ੍ਹੇ ਸਮਯ ਕੇ ਬਾਦ ਵਹੀ ਵਸਤੁ ਫਿਰ ਪ੍ਰਿਸ਼ਠਭੂਮਿ ਕੇ ਰੂਪ ਮੇਂ ਦਿਖਾਈ ਦੇਤੀ ਹੈ। ਔਰ ਪਹਲੇ ਜੋ ਪ੍ਰਿਸ਼ਠਭੂਮਿ ਕੇ ਰੂਪ ਮੇਂ ਦਿਖਾਈ ਦੇ ਰਹੀ ਥੀ ਵਹ ਅਬ ਆਕ੍ਰਿਤਿ ਕੇ ਰੂਪ ਮੇਂ ਦਿਖਾਈ ਦੇਤੀ ਹੈ।

ਮਸਤਿਸ਼ਕ ਮੇਂ ਏਕ ਐਸੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਪ੍ਰਕਾਰ ਕੀ ਘਟਨਾ ਜਿਸੇ ਪਰਿਵਰਤਿਤ ਘਟਨਾ ਕਹਾ ਜਾਤਾ ਹੈ। ਇਸੇ ਪਰਤਾਵਰਤੀ ਪ੍ਰਤਯਕਸ਼ਣ ਕੀ ਸਮਸਯਾ ਕੀ ਹੈ। ਜਬਕਿ ਪਰਤਾਵਰਤੀ ਪ੍ਰਤਯਕਸ਼ਣ ਕੇ ਅਧਯਯਨ ਮੇਂ ਨਾਮਕ ਕਾਲੇ ਸਿਰੇ ਪਰ (ਫੂਲਦਾਨ ਆਕ੍ਰਿਤਿ, ਸਾਮਨੇ ਦੋ ਚੇਹਰੋਂ ਕੀ ਆਕ੍ਰਿਤਿਯਾਂ ਪਰ) ਕਾਮ ਕਰਕੇ ਤਸ ਕੇ ਕੈਲਰ ਤਥਾ ਵੇਰਥਾਈਮਰ ਨੇ ਇਸਸੇ ਸੰਬੰਧਿਤ ਮਸਤਿਸ਼ਕੀਯ ਪ੍ਰਕ੍ਰਿਯਾ ਸੰਤੁਲਨ ਕੀ ਸਥਿਤਿ ਮੇਂ ਪਾਰਸਪਰਿਕ, ਪਰਿਵਰਤਿਤ, ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਤੀ ਹੈ ਅਪਨੇ ਆਪ ਉਰਜਾ ਸ਼ਕਤਿ ਕੇ ਸਾਮਨੇ ਆ ਜਾਤਾ ਹੈ ਔਰ ਫਿਰ ਇਸਸੇ ਸੰਬੰਧਿਤ ਮਸਤਿਸ਼ਕ ਕ੍ਸ਼ੇਤ੍ਰ (Field) ਉਤੇਜਿਤ ਹੋਤਾ ਹੈ ਤਥਾ ਫਿਰ ਧੀਰੇ-ਧੀਰੇ ਪਰਿਵਰਤਿਤ ਕੀ ਓਰ ਬਢਨੇ ਲਗਤਾ ਹੈ। ਪਰਿਵਰਤਿਤ ਹੁਆ ਹੋਤਾ ਹੈ ਕਿ ਫਿਰ ਅਪਨੇ ਆਪ ਪਹਲੀ ਆਕ੍ਰਿਤਿ ਆਦਿ ਕੇ ਸਾਮਨੇ ਆਤੀ ਹੈ ਇਸ ਤਰਹ ਕੇ ਪਰਿਵਰਤਿਤ ਘਟਨਾ ਕੋ ਗੇਸਟਾਲਟਵਾਦਿਯੋਂ ਦ੍ਵਾਰਾ ਪ੍ਰਤਯਕਸ਼ਣ ਕੇ ਏਕ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਪਹਲੂ ਕੀ ਸਮਸਯਾ ਕਹਾ ਗਯਾ ਹੈ। ਜਿਸੇ ਆਕ੍ਰਿਤਿ ਅਨੁਭਵ ਕੀ ਸ਼੍ਰੇਣੀ ਕੀ ਮੌਲਿਕ ਏਵੰ ਗਯਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਰਹ ਕੇ ਪ੍ਰਤਯਕਸ਼ਣ ਕਾ ਸਵਰੂਪ ਅਨੁਭਵ ਪਰਾਸ਼੍ਰਯੀ ਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਿਤ ਹੋਤਾ ਹੈ। ਗੇਸਟਾਲਟ ਮਤ ਕੇ ਅਨੁਸਾਰ ਪ੍ਰਤਯਕਸ਼ਣ ਆਕ੍ਰਿਤਿ ਕਾ ਪ੍ਰਤਯਕਸ਼ਣ ਕੇ ਪ੍ਰਤਯਕਸ਼ਣ ਮੇਂ ਏਕ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਪਹਲੂ।

Scanned with CamScanner

जिसे बहुस्थिरता कहा जाता है। प्रत्यक्षण की बहुस्थिरता के एक विशेष पहलू (aspect) जिसे बहुस्थिरता कहा जाता है की चर्चा करता है। बहुस्थिरता से तात्पर्य उस बात से होता है कि एक ही उद्दीपक को भिन्न-भिन्न ढंगों से संगठित (organized) किया जा सकता है जिससे भिन्न-भिन्न तरह की आकृति का प्रत्यक्षण होता है। इस तरह की प्रत्यक्षण सिर्फ दृष्टि क्षेत्र में ही नहीं बल्कि अन्य क्षेत्रों जैसे- श्रवण- आदि में भी होता है।

प्रत्यक्ष संबोधन उपागम के अनुसार प्रत्यक्षण, संवेदन तथा अन्य उद्दीपक, मानसिक प्रक्रियाएँ एक-दूसरे से भिन्न नहीं होती है बल्कि एक दूसरे से अंतर संबंधित हैं। जब व्यक्ति का अध्ययन एक खास तरह से करता है किसी भी वस्तु का तो उसमें एक दूसरे पर निर्भर होकर उन्हें एक प्रभावित होते हैं, तो सबसे संवेदन होता है। फिर उसका संबोधन करने के कारण से प्रत्यक्षण होता है। प्रत्यक्षित उद्दीपकों या घटनाओं को संबोधित कर सकते उसे स्मृति (memory) में जाता है।

प्रत्यक्ष संबोधन उपागम में प्रत्यक्षण को एक समस्या-समाधान कहा, अर्थात अपने अनुभवों के आधार पर यह बतलाया है कि उपागम का स्वभाव अति एक क्रियाशील दृष्टिकोण है। जिसके माध्यम से व्यक्ति सारे अस्पष्ट सूचनाओं को संगठित या एकत्रित कर उन्हें व्याख्यायित करने में मदद मिलती है। मनोवैज्ञानिक ने भी प्रत्यक्ष संबोधन उपागम को समर्थन प्रदान किया गया है। उनका मत है कि प्रत्यक्षणों को संबोधन करके अवस्थाओं में होता है।

Dr. Parmanand [illegible] Sahu

Date- [illegible]/05/020